

श्रीमदनगोपालाष्टकम्


Shri Madanagopalashtakam

sanskritdocuments.org


March 16, 2019

---


# Shri Madanagopalashtakam



## श्रीमदनगोपालाष्टकम्



### Sanskrit Document Information



---

Text title : madanagopALAShtakam

File name : madanagopALAShtakam.itx

Category : vishhnu, krishna, aShTaka, vishvanAthachakravartina, stavAmRRitalaharI

Location : doc\_vishhnu

Author : Vishwanatha Chakravarti

Transliterated by : Jan Brzezinski (Jagadananda Das) jankbrz at yahoo.com and Neal

Delmonico (Nitai Das) ndelmonico at sbcglobal.net

Proofread by : Jan Brzezinski, Neal Delmonico

Acknowledge-Permission: <http://granthamandira.net> Gaudiya Grantha Mandira

Latest update : March 16, 2019

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

March 16, 2019

*sanskritdocuments.org*



श्रीमदनगोपालाष्टकम्



मृदुतलारुण्यजितरुचिरदरदप्रभं  
कुलिशकञ्जारिदरकलसझषचिह्नितम् ।  
हृदि ममाधाय निजचरणसरसीरुहं  
मदनगोपाल ! निजसदनमनु रक्ष माम् ॥ १ ॥

मुखरमञ्जीरनखशिशिरकिऋणावली  
विमलमालाभिरनुपदमुदितकान्तिभिः ।  
श्रवणनेत्रश्वसनपथसुखद नाथ हे  
मदनगोपाल ! निजसदनमनु रक्ष माम् ॥ २ ॥

मणिमयोष्णीषदरकुटिलिमणिलोचनो-  
च्चलनचातुर्यचितलवणिमणिगण्डयोः ।  
कनकताटङ्करुचिमधुरिमणि मज्जयन्  
मदनगोपाल ! निजसदनमनु रक्ष माम् ॥ ३ ॥

अधरशोणिभिर्नि दरहसितसितिमार्चिते  
विजितमाणिक्यरदकिरणगणमण्डिते ।  
निहितवंशीक जनदुरवगमलील हे  
मदनगोपाल ! निजसदनमनु रक्ष माम् ॥ ४ ॥

पदकहारालिपदकटकनटकिङ्किणी  
वल्य ताटङ्कमुखनिखिलमणिभूषणैः ।  
कलितनव्याभ निजतनुरुचिभूषितै-  
र्मदनगोपाल ! निजसदनमनु रक्ष माम् ॥ ५ ॥

उडुपकोटीकदनवदनरुचिपल्लवै-  
र्मदनकोटीमथननखरकरकन्दलैः ।  
द्युतरुकोटीसदनसद्यनयनेक्षणै-  
र्मदनगोपाल ! निजसदनमनु रक्ष माम् ॥ ६ ॥

कृतनराकारभवमुखविबुधसेवित !  
द्यूतिसुधासार ! पुरुकरुण ! कमपि क्षितौ ।  
प्रकटयन् प्रेमभरमधिकृतसनातनं  
मदनगोपाल ! निजसदनमनु रक्ष माम् ॥ ७ ॥

तरणिजातीरभुवि तरणिकरवारक  
प्रियकषण्डास्थमणिसदनमहितस्थिते !  
ललितया सार्धमनुपदरमित ! राधया  
मदनगोपाल ! निजसदनमनु रक्ष माम् ॥ ८ ॥

मदनगोपाल ! तव सरसमिदमष्टकं  
पठति यः सायमतिसरलमतिराशु तम् ।  
स्वचरणाम्भोजरतिरससरसि मज्जयन्  
मदनगोपाल ! निजसदनमनु रक्ष माम् ॥ ९ ॥

इति श्रीविश्वनाथचक्रवर्तिठक्कुरविरचितस्तवामृतलहर्या  
श्रीमदनगोपालाष्टकं सम्पूर्णम् ।

---

*Shri Madanagopalashtakam*

pdf was typeset on March 16, 2019

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

